समाज जालपा की समस्याएँ ही उपन्यास की प्रमुख समस्या है जिनके प्रस्तुत करने के लिए लेखक ने विभिन्न परिस्थितियों एवं घटनाओं का चित्रण किया है। उपन्यास में कथानक का विकास इन्हीं दोनों पात्रों के कारण होता है। 'गबन' की मुख्य समस्या के निर्धारण में इनका महत्वपूर्ण योगदान है। संक्षेप में इस उपन्यास की समस्याओं को निम्नलिखित रूप में रखा जा सकता है—

1. आभूषण प्रेम की समस्या :— नारी जाति की आभूषण-प्रियता की समस्या को 'गबन' में मुख्य रूप से रखा गया है। स्त्री चाहे धनी वर्ग की चाहे मध्यवर्ग की और चाहे निम्न वर्ग की उसमें गहनों के प्राप्त करने की ललक एवं प्रेम समान होता है। इस उपन्यास का संपूर्ण कथानक नारी की इसी आभूषण-प्रियता पर आधारित है और उपन्यास का प्रत्येक स्त्री-पात्र गहनों के मोह में व्यस्त दिखाई देता है। जालपा बचपन से ही आभूषणों में पली है। जब वह तीन वर्ष की अबोध बालिका थी, उस समय उसके लिए सोने के चूड़े बनवाये गये थे। दादी जब उसे गोद में खिलाने लगती तो गहनों की ही चर्चा करती — 'तेरा दूल्हा तेरे लिए बड़े सुन्दर गहने लायेगा!' जब वह कुछ और बड़ी हुई, तब उसने गुड़ियों को गहने पहनाये थे। थोड़ा और बढ़ने पर अपने गाँव घर की स्त्रियों से वह गहनों की चर्चा सुना करती थी। इस तरह उसका जीवन एक ऐसी दुनिया में बीता था, जिसे मुंशी प्रेमचंद ने 'आभूषण-मंडित संसार' कहा है। ऐसी स्थिति में जालपा का गहनों से विशेष मोह होना कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। विवाह में ससुराल से चंद्रहार न आने पर उसे इसी कारण विशेष क्षोभ होता है।

Scanned with CamScanner